

Geography - BA-I (Hon... +Subsi...)

1

Paper-I - Unit-II,

Topic - Landforms Resulted from Wind

(Add)

पवन द्वारा निर्मित

- खूलाकृति]

मरुतों तथा हिमानीयों की मौलि पवन की आघात, परिवहन तथा निक्षेप के द्वारा सृजित हैं। जमीन प्रवाह और प्रेशर में बहने हुए अति, कोर्रुसिव पर्वतीय भागों तथा उच्च अक्षांशीय प्रदेशों में छिन्नी के कार्य अत्यन्त प्रभावशाली होते हैं; उनी प्रवाह शुष्क कोर्रुसिव शुष्क प्रदेशों में पवन के कार्य अनेक विधियों द्वारा प्रकट होते हैं।

हिमनदी की आति वादु की अपृष्ठ व ऊपरदन परिवहन कोर्रुसिव कार्य करती हैं। नदी की मौलि पवन के भी ऊपरदनात्मक परिवहन कोर्रुसिव कार्य करती हैं। कोर्रुसिव निर्मित कू. आकृतियों इन्सेलबर्ग एवं महेबर्ग आदि हैं। -पवन के ऊपरदनात्मक कार्य को प्रकाशित करने वाले तत्वों को जलवायु (2) पवन की वेग

- 1) शैल संरचना
- 2) पवन के ऊपरदनात्मक वेग और वीर्यता की ताशा मुख्य हैं। वादु ऊपरदन द्वारा निर्मित प्रमुख खूलाकृतियों में (क) वातगर्त
- ख) इन्सेलबर्ग
- ग) खूबक छिन्ना आगारा
- घ) अयुगेन
- ङ) थारडोंग / थारडोंग
- च) भू-दत्तक
- छ) आलीदार छिन्ना

1) पवन द्वारा अपरदन से उत्पन्न खूलाकृतियाँ (Topographic features Resulting from Wind Erosion)

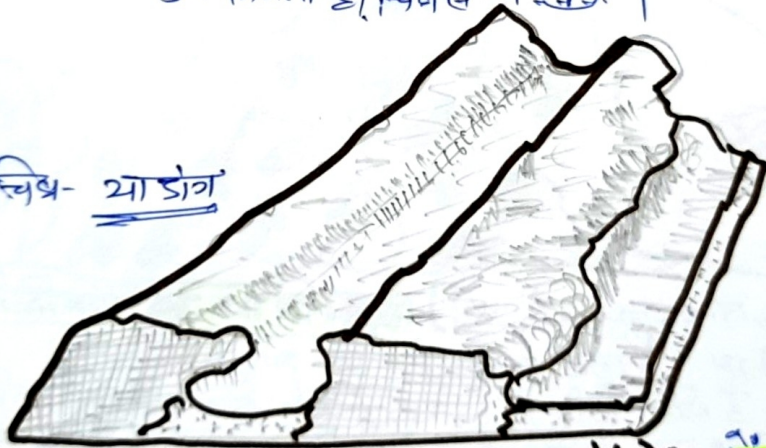
Resulting from Wind Erosion. - पवन के ऊपरदन से निर्मित प्रकार की खूलाकृतियों का उद्भव होता है ->

- (क) - वातगर्त (Blow out): - जहाँ दृष्टि के शुष्क एवं रेतीले महाखण्डों में पवन की अपवाह शक्ति निर्मित वातगर्त कहते हैं। जब पवन अपवाह रूप में चलता है तब वातगर्त को आवक शैलों के कों कोर्रुसिव कार्य अपवाह शक्ति से उड़ा ले जाता है और जो प्रकार के गर्तों को वातगर्त कहते हैं। दक्षिणी कैलीफोर्निया और अरब में इसी प्रकार के गैरियाल के क्षेत्रों में ऐसे प्रकार के वातगर्त वृष्टिपूर्व चद्र होते हैं।
- (ख) इन्सेलबर्ग (Inselberg): - शुष्क कोर्रुसिव प्रदेशों में अनेक प्रकार के पर्वत उभरे चट्टानें पाई जाती हैं। वे वादु द्वारा अपघर्षण तथा अपवाह (Abrasion and deflation) की शक्ति से वे कट-छूट कर मुबदला रूप में उभरे हुए हैं। जैसा कि संकी प्रकाश में गहरे (Not visible)

3
 - यहाँ की यह कटाव पीछे घेता चला जाता है। प्राचीन काल में मुलायम चट्टानें बरत जाती हैं तथा कठोर चट्टानें बनाती हैं। इन प्रकार मुलायम चट्टानों के बीच-बीच में खाने का जाती है। शहरों में अनेक प्रकार के चट्टानों की ऐसी काश्तियों को **अयुगेन (Zeugen)** कहा जाता है। अयुगेन भी वास्तव में **पेदलथ (Pedestal Rock)** है जिसका कारण गेज की तरह स्पष्ट होता है।

5) **थारदांग/थारदांग (Varadang)** - थारदांग की रचना अयुगेन के विराम होती है। जब कोमल तथा कठोर चट्टानों का त्वर-अवतरण किया में मिलने है, तो पवन कठोर शैल की कषेक्षा मुलायम शैल को शीघ्र अपरिचित करके उड़ा ले जाते हैं। इन प्रकार कोमल शैलों के अपरिचित होकर उड़ा जाने के कारण कठोर चट्टानों के भाग खड़े रह जाते हैं। इसे थारदांग/थारदांग कहते हैं। थारदांग **इराक, इजान, कारवा** जैसे **मध्य एशिया** के अनेक भागों में बहुत मिलता है। चित्र संख्या 4।

चित्र- थारदांग



6) **शु-स्तम्भ (Demoiselles or Stumps)** :- **फ्रेंच भाषा में इसे**

इजल का अर्थ शू-स्तम्भ है। कीली कोमल शैलों के कारण जब कठोर व अतिरिधी शैलें विच्छेद होती हैं तो वे नीचे की कोमल शैलों के संरक्षण प्राप्त करती हैं। कालान्तर के अगल-अगल की कोमल शैलों को अपरिचित होता है। अतः इनके शीर्ष पर कठोर शैलों का आवरण शेष रहता है। कुछ काश्तियों को **फ्रेंच भाषा में इसे** **शु-स्तम्भ** के रूप में जाना देती है। चित्र संख्या 5।

चित्र शु-स्तम्भ



GOVERNMENT DEGREE COLLEGE

MADHUBAN, PAKARI DAYAL "EAST CHAMPARAN,, (BIHAR)

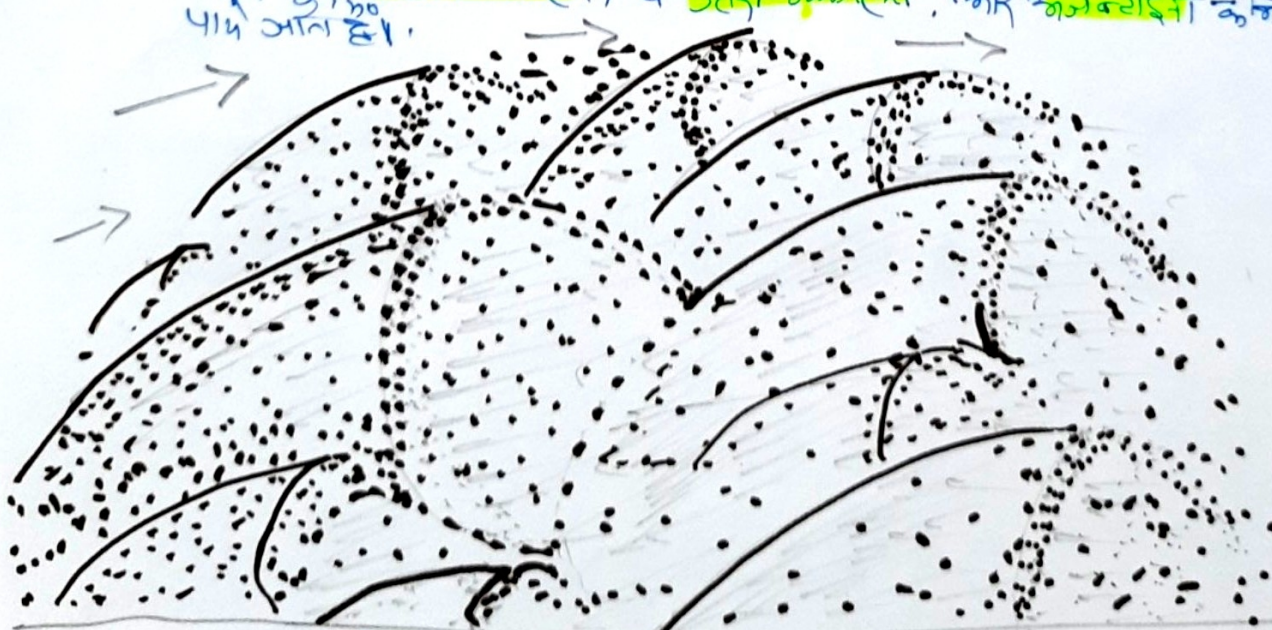
Dr. GAUTAM KUMAR (Department of Geography)

ऐसे ही आरंभ होना के विशेष कार्य - संवर्धन हो सकते हैं। (5) इसके विशेष कार्य के अनेक उदाहरण मिलती हैं।

(i) ड्राप काथ (Ripples) → वेनीम की तरंगों में सतह पर लागीय लहरों की भाँति विकसन पाये जाते हैं। इनका निर्माण पवन की क्रिया के समवेग पर महीन रेत के उद्वेगण से होता है। पवन की क्रिया के परिवर्तन के साथ ही वे षिगड़ जाती हैं।

(ii) बालुका द्युप (Sand Dunes) → शुष्क एवं अर्धशुष्क प्रदेशों में वायु के अभाव से बनी सर्वोत्तम महत्वपूर्ण आकृति वायुका द्युप है। ये कड़े उका के होते हैं। यह लम्बे तट के किनारे एवं किनारे दोनों ही दिशा में पाये जाते हैं। बालुका द्युप का निर्माण रेत की अधिकता, हवा की क्रिया, वेग वायु के अभाव का सुदृष्टित स्थान, गर्म की साधा आदि के कारण होती है।

(iii) लॉमस (loess) → अत्यन्त खारीक कणों के सम्बद्ध चूरी शील लुप्तकालीन की पीले रंग की शूल की पवन उड़क लै जाता है और जमीन स्थान पर जमा होता है। विश्व का लॉमस (loess) कटोरे में अलग में धूल जाती है तथा बहुत अजाक होती है। दली होने के कारण भी नदियाँ आसानी से काट देती हैं। लॉमस के उद्वेग (अभाव) उत्तरी चीन, यूजीलैण्ड, अमेरिका, मध्यपूर्वी कोस्टलिया टैरिरी अमेरिका, व उत्तरी अमेरिका, और अर्जेंटीना के प्रदेशों में पाये जाते हैं।



चित्र :- बालुका द्युप.

Dr. GAUTAM KUMAR (Department of Geography)

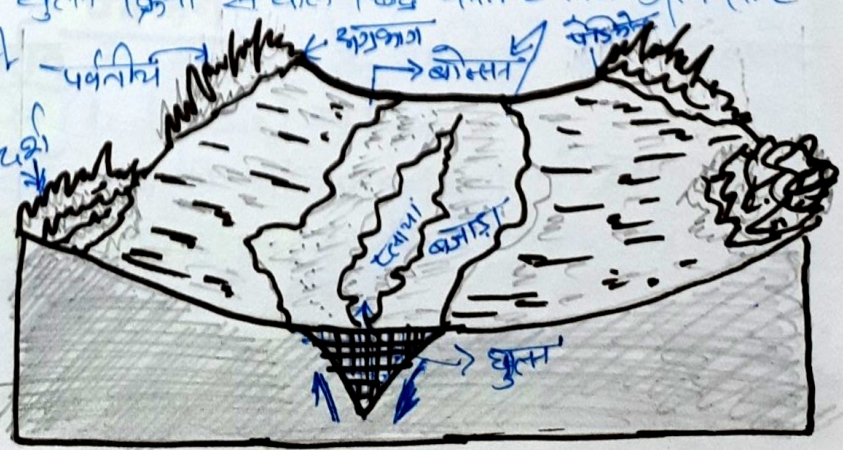
(6)

कृषि शुष्क प्रदेशों में हवा के साथ-साथ कभी-2 घंटे वाली वर्षा एवं बहुत ही अल को कार्य की महत्वपूर्ण होता है पर कटाव एवं जमाव की सामंजस्य बिना ही कई प्रकार की सू. आकृतियाँ बनती जाती हैं। इनमें पैडिमेंट, बजाड़ा, लुआ और महत्वपूर्ण हैं।

पैडिमेंट (Pediment): - शुष्क एवं कृषि शुष्क प्रदेशों में प्रायः जिमी पर्वत पहाड़ या इंसल को के पर्वतीय भाग में एक लगभग ढाल वाला कटाव विस्तृत होता है; ऐसे निचले चट्टानों पर समतल सू. भाग को पैडिमेंट कहते हैं। यह लुआतक पानी के कटाव व अपक्षय से बनता है। इनके पीछे का पर्वतीय भाग कभी तेज ढाल वाला होता है। कभी-2 ज़ीलों पर कभी का ढाल गुरु का कटाव जैसा हो सकता है। कई बार हवा भी ऐसे पैडिमेंट के निर्माण में सहायक रहती है। ऐसे पैडिमेंट के भाग के भाग में बड़ीक मिट्टी का जमाव पाया जाता है।

बजाड़ा (Bajada) → बजाड़ा पैडिमेंट के नीचे का भाग है। यह परत पैडिमेंट का निर्माण के समय बसकर और पठार्य बढ़ता जाता है। नीचे या ऊपर भागों का कटाव एवं निचले भागों में जमाव यह होता है। कार्य हवा एवं पानी की सामंजस्य बिना ही होकर रहते हैं। जीमिटाग तथापि इनका ढाल धीमा रहता है। जो भी यह लक्ष्य होना है। यह परत कोट व नीचे का भाग के निर्माण जमाव की अलग-अलग मोटाई की परत जमा होती जाती है। अतः यह भाग कार्य व पशुपालन के लिये भी उपयुक्त है।

प्लायोसिस्टम डेल्टा (Ploypa): - नदियों द्वारा बालुका के तल में सिस्टम के जमाव होते रहते हैं। जैसे बालुका की तली अपभ्रंश है। वाष्पीकरण द्वारा अल सूख जाते पर सूखने के सिद्ध होकर रह जाते हैं। प्लायो का आकार कुछ वर्ग Km से लेकर सैकड़ों वर्ग Km तक होता है। प्लायो में सिस्टम पदार्थ की की-कितना बड़ा जाती है। चमकीले नमक के सिद्ध होते पर उड़ने काल काली प्लेट (Alkali flat) कहते हैं। इसी तली में ठीले पदार्थकृत पर्वत होने पर पवन के अपवाह कार्य से वातगता बन जाते हैं तथा भूमिगत अल की धुलन प्रिया से धोल सिद्ध बनते हैं तथा जीमिटाग अलमतल हो जाती है।



चित्र: -
 मुख्यपर्वतों की धुलन
 सू. आकृतियाँ।

Model Questions:-

Q-1 - वायु अपरदन द्वारा उत्पन्न विभिन्न स्थलाकृतियों का वर्णन कीजिए।

(Describe with examples the characteristic topographical features produced by wind erosion.)

Q-2 शुष्क स्थानों में अपरदन के प्रक्रमों का वर्णन कीजिए और कठोर व अ-ठोस की प्रमुख स्थलाकृतियों का वर्णन कीजिए।

(Describe the process of erosion under arid condition and describe the chief topographical features of the desert landscape.)

Q-3 वायु के निक्षेपण कार्य तथा इन कार्य से उत्पन्न स्थलाकृतियों का वर्णन कीजिए।
(Describe the deposition work of wind and landforms formed by it.)

Dr. Gautam Kumar
Department of Geography